एक बार फिर होली आई है : ढेर सारी उपाधियां लाई है

हास्य व्यंग्य के चटकारे के साथ राष्ट्रदूत ने

खोला मद मस्त उपाधियों का पिटारा

होली के ठहाके और व्यंग्य : बुरा न मानो होली है

तन में तरंग लिए मन में उमंग लिए
लाल पीले रंग से रंगी हैं पिचकारियां।

कल छूते पांव थे, आज घसीटें पांव
रंग बदलने की कला, खूब जानते आप।

होली के पावन पर्व पर आप सभी को राष्ट्रदूत परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

होली का त्योहार भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अद्वितीय हिस्सा है। यह रंगों का उत्सव हर साल उत्साह और खुशियों के साथ मनाया जाता है। रंगों के त्योहार होली पर हास्य-व्यंग्य का तड़का लग जाए तो यकीनन मजा दोगुना हो जाता है। होली मौज-मस्ती और प्रेम-सौहार्द से सराबोर होने वाला त्योहार है। यह त्योहार अपने भीतर परंपराओं के विभिन्न रंगों को समेटे हुए है, जो विभिन्न स्थानों में अलग-अलग रूपों में सजे-धजे नजर आते हैं। विभिन्नता में एकता वाले इस देश में अलग-अलग क्षेत्रों में इस त्योहार को मनाने का अलग-अलग अंदाज हैं। मगर इन विविधताओं के बावजूद हर परंपरा में एक समानता अवश्य है और वह है प्रेम और उत्साह, जो लोगों को आज भी सब कुछ भूला कर हर्ष और उल्लास के रंग में रंग देते हैं।

होली का त्योहार दो दिनों का होता है जिसमें एक दिन होलिका दहन और दूसरे दिन रंगोत्सव मनाते हैं। होली रंगों का त्योहार है। सदियों से मनाया जा रहा यह एक ऐसा त्योहार है जो हर वर्ग, जाति, उम्र और पीढ़ी के लोगों को जोड़ने का काम करता रहा है। हर कोई साथ मिल कर समूची मानवता के इस पर्व को एक इकाई के रूप में मनाते हैं, और यही होली का संदेश है। होली का प्रत्येक रंग जीवन में ऊर्जा, जीवंतता और आनंद का सूचक होता है। होली के दिन प्यार के रंगों से सबको रंग कर नफ़रत, घृणा, झूठ और दर्द को मिटाते हैं। कहते हैं, प्यार का रंग अगर चढ़ जाए तो फिर कोई और रंग नहीं चढ़ पाता. तो क्यों न इस होली अपनों को प्यार वाले रंग के साथ रंग दो और गिले-शिकवे मिटा लो क्योंकि होली में अपनों का साथ हो, गुझिया की मिठास हो, भांग का नशा हो और दोस्तों का हुड़दंग हो तो समझो होली ख़ुशियां दोगुनी हो गईं। हमारा देश विविधता में एकता का देश है। यहाँ प्रत्येक त्योहार को बहुत ही खुशी के साथ मनाया जाता है, उसी में से एक होली का त्योहार भी है। होली का नाम सुनते ही सभी लोग उत्साह से भर जाते हैं। होली भारत का बहुत ही त्योहार है तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। लोग रंग और गुलाल के साथ होली खेलते हैं।

होली के रंगों के अलग-अलग अर्थ होते हैं, समझ में आ जाएं तो इंद्रधनुष, समझ न आये तो व्यर्थ होते हैं। होली में हर किसी का मन चहकता है, बहकता है। मौसम का असर ऐसा कि पत्थर दिल भी बहकता है। हर तरफ छा जाती है विशेष मादकता। मेहरबान, कद्रदान, आपको पता है हंसी-खुशी की दुकान? नहीं न तो हम बताते हैं। दम घोंटू वातावरण में हास्य व्यंग समाज को ऑक्सीजन देने का काम करता है। इस बहाने समाज का तनाव कम होता है और उसे राहत मिलती है। किसी जमाने में जमकर होली खेली जाती थी। होली आई रे कन्हाई रंग बरसे सुना दे मुझे बाँसुरिया. जैसे कई गाने चला करते थे। रंग बरसे भीगे चुनर वाली तो सबकी जुबान पर चढ़ गया था। दूरदर्शन पर आने वाले चित्रहार और रंगोली में तो होली वाले सप्ताह में बस होली के गाने ही चला करते थे। सब बुरा न मानो होली है का राग अलापते थे, पर बदलते समय के साथ होली का रंगरूप भी बदल चुका है।

13 मार्च
होलिका दहन मुहूर्त
रात्रि 11 बजकर 26 मिनट से 12 बजकर 30 मिनट
भद्रा पूंछ : शाम 6.57 से शाम 8.14 बजे
भद्रा मुख : शाम 8.14 से रात्रि 10. 22 बजे

14 मार्च
रंगवाली होली
पूर्णिमा तिथि आरम्भ : सुबह 10. 35 13 मार्च
पूर्णिमा तिथि समाप्त : दोपहर 12. 23 14 मार्च

आज भी होली आने पर पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं।

आइये आपको होलियाना माहौल में लेकर चलते है। हर किसी की यादें होली से जुड़ी होती हैं। वसंत ऋतु का अल्हड़पन होली में समाहित होता है और यही अल्हड़पन होली के रंग में डूबने वाले हर शख्स में नजर आने लगता है। होली के फिल्मी गीत हो या फाग की फुहार, हर कोई रंग, गुलाल के साथ झूम उठता है। उत्साह और उमंग में डूबने का नाम होली है। कोई रंग गुलाल खेले न खेले पर होली में हर शख्स एक दूसरे को मिलते ही होली है, जरूर कहता है। होली पर कविता, व्यंग्य, कहानी, उपाधियों आदि की समृद्ध परंपरा रही है हास्य गीतों और व्यंग्य की बौछारों के बिना होली अधूरी सी लगती है। गांव हो या शहर या फिर कस्बा, होली के अवसर पर एक-दूसरे को ताना देना, मजाकिया लहजे में बड़ी से बड़ी बातें कह जाना आम है। होली से जुड़ी यादें हमेशा लोगों के जेहन में उत्साह उमंग और जोश पैदा करती हैं। पहले होली के मौके पर महामूर्ख सम्मेलन आयोजित होते थे और अखबारों में नामी-गिरामी लोगों को उपाधियां दी जाती थीं। अब यह परंपरा आखिरी सांसें ले रही है। इसलिए राष्ट्रदूत के साथ होली के हुड़दंग में, उल्लास में उमंग में, मन की तरंग में, हंसी-खुशी के रंग में भीगने को हो जाइए तैयार। होली की उपाधियों के अलग-अलग अर्थ होते हैं, समझ में आ जाएं तो इंद्रधनुष, समझ न आये तो व्यर्थ होते हैं। हमारे साथ आइए, हास्य-व्यंग्य के होलियाने का आनंद उठाइए। इन्हें प्यार से अपने मन मस्तक पर सजाएं, मुस्कुराएं, हंसे और खिलखिलाएं। राष्ट्रदूत परिवार अपनी परंपरा का निर्वहन करते हुए एक बार फिर हास्य - व्यंग्य की फुव्वारों के साथ उपाधियों का पिटारा लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ है। हम खोल रहे है आपके लिए सदा की तरह उपाधियों का पिटारा। ऐसी उपाधियाँ जिससे लोगों को बुरा न लगे और उनकी बात सामने वाले तक भी पहुंच जाए। बांके त्योहार होली के लिए यह विशेष कहावत भी महत्वपूर्ण है कि बुरा न मानो होली है। आशा है की सदा की भांति आप इस उत्सव की गरिमा के अनुरूप इन चुटीली और सुपर हिट उपाधियों को बड़े दिल से स्वीकार करेंगे। आप सभी को होली की शुभकामनाएं।

होली परिशिष्ट के अतिथि संपादक वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार बाल मुकुंद ओझा

सियासत के सूरमा

जगदीप धनखड़	– स्टेटसमैन
ओम बिरला	– पावरफुल
गुलाबचन्द कटारिया	– जनसेवक
हरिभाऊ बागड़े	– जनता का रखवाला
ओमप्रकाश माथुर	– लम्बी पहुंच
भजनलाल शर्मा	– भला आदमी
गजेंद्रसिंह शेखावत	– मुकद्दर का सिकंदर
भूपेन्द्र यादव	– मैं किसी से कम नहीं
अर्जुन मेघवाल	– वादे ही वादे
दिया कुमारी	– चमक सूरज की नहीं मेरे किरदार की है
डॉ. प्रेमचन्द बैरवा	– सजावटी फूल
वसुन्धरा राजे	– अच्छे दिन आयेंगे
वासुदेव देवनानी	– अनुशासन का डंडा
गजेंद्र सिंह खिंवसर	– पांचों अंगुलियां घी में
डा. राधा मोहन दास अग्रवाल	– कड़क डाक्टर
मदन राठौड़	– हैड मास्टर
राजेन्द्र राठौड़	– लालबत्ती का इंतजार
सतीश पूनियां	– जमीन से जुड़ा
मदन दिलावर	– नवाचार
किरोड़ी लाल मीणा	– बाबा बवंडर
कन्हैयालाल चौधरी	– चौधराहट
बाबूलाल खराड़ी	– आदिवासी सरकार
ज्योति मिर्धा	– दिल के अरमां आंसूओं में बह गए
नारायण पंचारिया	– सूनी पंचायती
सरदार अजयपाल	– ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर
के के विश्नोई	– नया दूल्हा
जवाहर सिंह बेढ़म	– बाबा से परेशान
बाबा बालकनाथ	– पावर कट
सी. आर चौधरी	– भूले बिसरे गीत
श्रवण बगड़ी	– लटका झटका
झाबर सिंह खर्रा	– शेखावटी का धमाल
अमित गोयल	– बिल्ली के भाग का छींका
पिंकेश पोरवाल	– ठालो बाबो
राजेश गुर्जर	– फेर आयग्यो
मुकेश दाधीच	– दुख भरे दिन बीते रे भैय्या
लक्ष्मीकांत भारद्वाज	– बीरबल
गोपाल शर्मा	– आत्म मुग्ध
मंजू शर्मा	– विरासत
जितेंद्र गोठवाल	– नम्बर का इंतजार
प्रभुलाल सैनी	– सूखी फसल
सुमित गोदारा	– किस्मत का धनी
जोगाराम पटेल	– जोधपुरी मिर्ची बड़ा
जोगाराम कुमावत	– तकदीर का बादशाह
जोगेश्वर गर्ग	– कौन सुने फरियाद
सी आर चौधरी	– नागौरी मैथी
मुकेश पारीक	– भोला भंडारी

कांग्रेस

सचिन पायलट	– नहीं मिली उड़ान
गोविंद सिंह डोटासरा	– होली पर फिर 'गमछा' लहराऊंगा
हरीश चौधरी	– मौके की तलाश में
डॉ.सी.पी.जोशी	– अब मेरे को कौन पूछेगा
अशोक गहलोत	– मैं थां सू दूर हूं
विश्वेन्द्र सिंह	– महल की छत पर चढ़ूंगा
भंवर जितेन्द्र सिंह	– हाथ पैर मारता रहता हूं
टीका राम जूली	– अभी तो मेरी चल रही है
डॉ.बी.डी.कल्ला	– ऐसा तो सोचा ही नहीं था
हरीश मीणा	– जनता के भरोसे
शांति धारीवाल	– अपने हुए बेगाने
रफीक खान	– जयपुर-दिल्ली एक्सप्रेस-वे
रामकेश मीणा	– मेरी पूछ बढ़ी
अशोक चांदना	– यहां के हम सिकंदर
डॉ.रघु शर्मा	– अभी तो मैदान में डटा हूं
डॉ.महेश जोशी	– रजिस्टर मेंटेन कर रहा हूं
प्रताप सिंह खाचरियावास	– सबको पीछे छोड़ूंगा
आर.आर. तिवाड़ी	– चारदीवारी का पहलवान
बृजेन्द्र ओला	– दूकान संभाल रहा हूं
संयम लोढ़ा	– सफेद कुर्ता पजामा
महादेव सिंह खण्डेला	– होली घर पर ही खेलूंगा
धीरज गुर्जर	– तूती बोलती है
हरिमोहन शर्मा	– हाथ में माला
इंद्रा मीणा	– मैं ही हूं सब कुछ
शिखा मील बराला	– सब की दवाई मेरे पास
राहुल कस्वा	– कभी सूट में तो कभी कुर्ता पजामा
मनीष यादव	– शाहपुरा का हीरो
अमीन कागजी	– उभरता बादशाह
कुलदीप इंदौरा	– गुलाल थैली में है
मुरारी लाल मीणा	– गाड़ी सरपट दौड़ी
दीपेन्द सिंह शेखावत	– जमा पूंजी
भीमराज भाटी	– बांका जवान
रतन देवासी	– तिलक सदाबहार
राजेन्द्र पारीक	– लादूराम का लाडू
ललित तूनवाल	– लाइम लाइट में रहूंगा
जसवंत गुर्जर	– यहां के हम सिकंदर

शासन के तीरंदाज

सुधांश पंत	– प्रशासनिक दमखम
डॉ. सुबोध अग्रवाल	– समय समय का फेर
शुभ्रा सिंह	– घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने
अभय कुमार	– बड़ी कुर्सी पर टकटकी
अखिल अरोड़ा	– अंगद का पांव
आलोक	– करंट, कभी आता कभी जाता
अपर्णा अरोड़ा	– जंगल सफारी
शिखर अग्रवाल	– बड़े घर की जिम्मेदारी
संदीप वर्मा	– अपुन तो अपने घर के बादशाह
कुलदीप रांका	– पंचायती जारी
श्रेया गुहा	– चलों अब गांवों का विकास करें
आनन्द कुमार	– कोउ नृप होउ हमें का हानि
प्रवीण गुप्ता	– स्वास्थ्य साथ नहीं देता
भास्कर आत्माराम सांवत	– मंजा खिलाड़ी
अश्वनी भगत	– भाग्य पर भरोसा
कुंजी लाल मीणा	– अपने भी दिन फिरेंगे
अजिताभ शर्मा	– राइजिंग राइजिंग
आलोक गुप्ता	– ना माधो का लेना ना साधो का देना
दिनेश कुमार	– कलम चलती रहे
राजेश कुमार यादव	– स्थानीय शासन
नवीन महाजन	– चुनाव चुनाव
गायत्री राठौड़	– ईलाज, लाईलाज
वैभव गलारिया	– विकास की दौड़
टी रविकांत	– पग फेरा ऐसा कि मिट्टी उगल रही सोना
सुबीर कुमार	– अब तो अन्नपूर्णा का भरोसा
भवानी सिंह देथा	– पंचकर्म ही सही
विकास सीताराम भाले	– कर्मचारियों के मी लार्ड
मंजू राजपाल	– सहकारिता का जंजाल
नवीन जैन	– जन जन का मन राखती
डॉ. कृष्णकांत पाठक	– और अब पुण्य लाभ
डा. पृथ्वीराज	– राजदरबार
कृष्ण कुणाल	– गुरु जी से पाला
भानू प्रकाश एटरु	– उच्च शिक्षा
रवि जैन	– सैर सपाटा
डॉ. समित शर्मा	– अब जिनावरों की हाजरी
आशुतोष पेडनेकर	– राजसखी से महिला सशक्तिकरण का डंका
नीरज कुमार पवन	– अपना तो खेलकूद जारी
आरुशी मलिक	– नाक पर मक्खी
डॉ. जोगा राम	– भले मानुष
पी रमेश	– श्रमिक एकता जिंदाबाद
पूनम	– कोने में
आरती डोगरा	– देखन में छोटी लगे, घाव करें गंभीर
वी सरवण	– ज्ञान-विज्ञान
शुची त्यागी	– परिवहन
राजन विशाल	– खेती बाड़ी
अर्चना सिंह	– एआई
महेन्द्र सोनी	– महिला सशक्तिकरण
सुषमा अरोड़ा	– घुमने घुमाने का दौर
कुमार पाल गौतम	– मुनीम जी
शैली किशनानी	– मास्टरनी जी
विश्राम मीणा	– पंडितों का संग
प्रकाश राजपुरोहित	– वसूली की चिंता
जितेन्द्र कुमार सोनी	– राजधानी का राज
इन्द्र जीत सिंह	– वर्चस्व की मार
नेहा गिरी	– दवाई-दवाई
विश्व मोहन शर्मा	– बच्चों का कलेवा
ओम प्रकाश	– बाल विकास
कन्हैया लाल	– पुलिस पर थानेदारी
नलिनी कठोतिया	– चुनावों की टेंशन
मेघराज सिंह	– बिस्तर समेटने की तैयारी
राजेन्द्र विजय	– अब विभागीय जांच में
प्रकाश चंद	– बड़े घर की जिम्मेदारी
संदेश नायक	– काम से काम, यही अपनी पहचान
शिवांगी स्वर्णकार	– जिम्मेदारियों का बोझा
अनुपमा जोरवाल	– एच गुट्टी

खाद्य सुरक्षा

हरी मोहन मीणा	– घर में नहीं दाने
रुक्मणी रियार	– साफ-सफाई
सिद्धार्थ सिहाग	– बड़े दरबार में
टीकम चंद	– एमएसपी जिंदाबाद
नथमल डिडेल	– प्रसारण में उलझे तार
अरविन्द कुमार पोसवाल	– बड़ी छलांग-
डॉ. रश्मि शर्मा	– आवासन की जिम्मेदारी
इकबाल खान	– डाक्टरी शिक्षा
डॉ. मनीषा अरोड़ा	– प्रवासी जिन्दाबाद
सुनील शर्मा	– विदाई की तैयारी
श्रुती भाग्द्वाज	– दूधों नहाओं
सुरेश कुमार ओला	– अब बागवानी ही भली
प्रियंका गोस्वामी	– चिंरजीवी आयुष्मान का चक्रव्यूह
जगजीत सिंह मोंगा	– डिफेंस में
डॉ. अरुण गर्ग	– अब कैसा सेटलमेंट
राजेन्द्र कुमार	– राशनदार
संचिता विश्नोई	– मछलियों का दाना-पानी
हर्ष सावनसुखा	– अभाव अभियोग
नारायण सिंह	– लो फ्लोर के फेरे
बचनेश अग्रवाल	– सशक्तिकरण किसका
सौरभ स्वामी	– बड़ी जिम्मेदारी
डॉ. घनश्याम	– बर्फ में
पुरुषोत्तम शर्मा	– चलो कुंभ के बहाने ही कुछ तो कमाया

बुलडोजर

आनंदी	– नाम बड़े दर्शन छोटे
निशांत जैन	– धूल में लठ्ठ
कैलाश विश्नोई	– राहत की सांस
ओंकारमल राजोतिया	– झोली भर गई
देवेन्द्र गुप्ता	– कोई मेरी भी सुनो
अजय गर्ग	– छुपा रुस्तम
प्रिया बलराम	– सब जानती हूं
विनय दलेला	– प्लानिंग बढ़िया है
रिंकू बंसल	– मास्टर प्लान की तैयारी
प्रीति गुप्ता	– कोई नहीं बचेगा
नवल मीणा	– डबल इंजन की सरकार
आदर्श चौधरी	– पीला पंजा
रामप्रसाद रैगर	– पावरफुल इंजीनियर
सुभाष चंद बोहरा	– कृष्ण कन्हैया
सपन मिश्रा	– पांचों उंगलिया घी में
रामप्रसाद मीणा	– भला मानुष

नरकासुर

डॉ. सौम्या गुर्जर	– पॉवर सेंटर
कुसुम यादव	– चार साल बाद पूरी हुई आस
पुनीत कर्णावट	– नए मुकाम की तैयारी
असलम फारूकी	– कुर्सी और खुशी सिर्फ नाम की
राजीव चौधरी	– विपक्षी सरदार
शील धाबाई	– वरिष्ठता की पूछ नहीं
सुखप्रीत बंसल	– मोहभंग
प्रवीण यादव	– बड़े चुनाव की तैयारी
मीनाक्षी शर्मा	– सरल स्वभाव
अभय पुरोहित	– चाणक्य
जितेंद्र श्रीमाली	– खजाना हाथ लग गया
दुर्गेश नंदिनी	– हम किसी से कम नहीं
राखी राठौड़	– आल इज वैल
रश्मि सैनी	– हम किसी से कम नहीं
विनोद चौधरी	– पुराने दिनों की याद
रमेश सैनी	– जमाना बदल गया
भारती लख्यानी	– आशाओं के बादल
पारस जैन	– अपना टाइम आयेगा
विकास बारेठ	– आक्रामक रणनीति
गजेंद्र सिंह चिराणा	– सुलझे इंसान
रामस्वरूप मीणा	– हमसे बढ़कर कौन
रामकिशोर प्रजापत	– जौहरी
अरुण शर्मा	– छोटा बच्चा जानकर
शंकरलाल शर्मा	– बातों के सौदागर
नरेन्द्र सिंह शेखावत	– जितना मीठा, उतना तीखा
हरीश शर्मा	– किस्मत के भरोसे
कुमकुम शक्तावत	– जय नेताजी
शेर सिंह धाकड़	– शब्दबाण
पीयूष किराडू	– सीधी बात-नो बकवास
विनोद शर्मा(सन्नी)	– सपने अधूरे रह गए
निशांत सुरोलिया	– गौ का बच्चा
इंद्रप्रकाश धाबाई	– रणनीतिकार
मनोज मुद्गल	– नेता बदले, फिर भी फायदा नहीं
लादूराम दुलारिया	– जेहि विधि राखे राम
उमरदराज	– मियां जी की दौड़ मस्जिद तक
अमर सिंह	– हिंदुत्ववादी

नरक निगम

अरुण कुमार हसीजा	– माया मिली ना राम
रुकमणि रियाड	– ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर
सुरेंद्र सिंह यादव	– चलती का नाम गाड़ी
सीमा कुमार	– अपना काम-अपना नाम
नारायण प्रसाद	– कानूनी फैसला
ओमप्रकाश शर्मा	– पोथी कानून की
विकास गजराज	– अपनी पगड़ी अपने हाथ
पुष्पेंद्र सिंह राठौड़	– डंडे की राठौड़ी
अजय कुमार शर्मा	– जैसा देश, वैसा भेष
सुनील कुमार सोनी	– कमाऊ पूत
ओमप्रकाश बैरवा	– हिसाब किताब
रविराय वर्मा	– कागजी हूनर
राजेश कुमार शर्मा	– मेहनत मेरी, नाम हुजूर का
अशोक कुमार शर्मा	– पांचों अंगुली घी में
ओमप्रकाश थानवी	– पुराने दिन ही अच्छे थे
प्रियव्रत सिंह चारण	– दिन फिरने का इंतजार
डॉ. रविकुमार गोयल	– भला मानस
लक्ष्मीकांत कटारा	– बिल्डिंग बिल्डिंग क्या है?
अपर्णा शर्मा	– बढ़ते कदम
मनोज कुमार वर्मा	– आसमान से गिरे..खजूर पर अटके
मोनिका सोनी	– जो हम से टकराएगा, चूर चूर हो जाएगा
नेहा मिश्रा	– सिरदर्दी की कुर्सी
रविन्द्र सिंह	– चिट भी मेरी, पट भी मेरी
करणीसिंह	– हाथी घोड़ों की सवारी
ममता नागर	– वही कुर्सी-वही पावर
मनीषा यादव	– काम से काम
कविता चौधरी	– पावर
तनुजा सोलंकी	– हिसाब हाजिरी का
तनुजा सोलंकी	– किसी की राई दुहाई में नहीं
निधि सिंह	– अपनी ढपली अपना राग
देवानंद शर्मा	– गुपचुप खेल...हाथों का मैल
सरिता मल्होत्रा	– रैंकिंग की टेंशन
सीमा चौधरी	– कोई पूछता नहीं
गीता करनानी	– चर्चाओं से दूर
युगांतर शर्मा	– पुराना खिलाड़ी
सुनील बैरवा	– सुधार की कोशिश
दिलीप कुमार भंभानी	– अपनी तो बल्ले बल्ले
श्याम लाल जांगिड़	– यारों का यार
कौशल कुमार खटूमरा	– गाय-भैंस की पकड़
सीमा शर्मा (द्वितीय)	– झटपट एक्शन
गौतम लाल	– फायर ब्रिग्रेड
डॉ. रश्मि कांकरिया	– शांति प्रिय
डॉ. सोनिया अग्रवाल	– छोटे चाणक्य
मनोज शर्मा	– कर भला तो हो भला
धर्मिता चौधरी	– व्यवहार कुशल
सुखबीर सिंह	– तोड़-फोड़ का हिसाब
नितिन शर्मा	– अनुभवी इंजिनियर
अतुल शर्मा	– मेरा कोई तोड़ नहीं
महेश मिश्रा	– हम से जमाना है, जमाने से हम नहीं
नरेंद्र मिश्रा	– इतिहासकार
चरण सिंह मीणा	– कहां फंस गया यार
प्रदीप शर्मा	– एक चुप्पी, सारी व्याधि खत्म
रूपाराम चौधरी	– बिजली का करंट
महेश कुमार शर्मा	– पुराना चावल
मनोज गोस्वामी	– अज्ञातवास
एन. के. अग्रवाल	– हमारा भी जमाना है
ओमप्रकाश काला	– बीते दिन ही सुहाने थे
कमलेश जैमन	– संन्यासी
दिनेश चंद गुप्ता	– प्रपंच से सौ कौस दूर
डॉ. योगेश शर्मा	– रामजी राजी
विक्रम सिंह बारेठ	– तांत्रिक
पवन शर्मा	– हरफन मौला
प्रशांत लखन	– शांति की चाहत
हिमांशु शर्मा	– पिक्चर अभी बाकी है..
पंकज मीणा	– आशा पर दुनिया कायम है

कारोबारी डंक

प्रहलाद शर्मा	– अब कमाई कोनी
मनीष मित्तल	– वर्ल्ड ट्यूर
अशोक जी	– अपनी मस्ती में मस्त
चंद प्रकाश भाटिया	– पुराने दिन याद आ रहे है
दर्शन अरोड़ा	– पेमेन्ट मत मांगना
दीपक गोधा	– समाज सेवा से कमाई
गोपाल जैन	– हिसाब का पक्का
जीवराज सिंह	– अंतिम चाह
के.एम. अग्रवाल	– संतोषी सदा सुखी
महावीर	– भरोसा तो करना पड़ता है
महेन्द्र	– बातुनी
मुकेश सिंह	– मेरा पैसा खाकर बताये
निशित	– हम पर भी नज़रे इनायत हो जाये
परम शर्मा	– हो गया हमारा काम
प्रकाश	– खईके पान बनारस वाल
पुष्पेन्द्र	– किस के लिए काम करूं
राजीव जैन	– मस्त मौला
एस.एन. चतुर्वेदी	– सब कुछ है
संजय मालपानी	– कोई ओर ना कमाएं
संजीव	– दर्शन दुर्लभ हो गये
सुंशात विजयवर्गीय	– क्या करे ना करे कैसी मुश्किल है
अमित परनामी	– सब को सुधार देंगे
शंभू	– अपनी तो जैसे तैसे
नरेन्द्र	– काम से काम रखना
कानाराम कुमावत	– दुकान चलाना मुझे आता है
अमित गुप्ता	– बैंक से चली दुकान
विमल श्रीवास्तव	– जाहि विधि राखे राम ताहे विधि रहिये
नरेश कुमावत	– काम ज्यादा कमीशन कम
हरी शंकर शर्मा	– फोल्डर ही ऑफिस
विकास ओझा	– अच्छे बाल, अच्छा मूड, अच्छा दिन
रवि ढींगरा	– बुलन्दियों पर

काला कोट

राजेन्द्र प्रसाद	– सरकारी मुखिया
राजदीपक रस्तोगी	– चाणक्य
भरत व्यास	– मुझसे बचके कहा जाओंगे
जी.एस. गिल	– आयोजन तो करा लूंगा
बी.एस. छबड़ा	– डिपार्टमेंट तो मैं ही पोथूंगा
विज्ञान शाह	– सरकार का पूला भर
कपिल माथूर	– साम दाम दण्ड भेद
भुवनेश शर्मा	– भाग्य हो तो ऐसा
माही यादव	– सरकार मेरी मुट्ठी में
राजेश चौधरी	– जी हुकुम जी हुकुम
आनन्द सुवालका	– कलाईयों का बेहतरीन इस्तेमाल, चार रन
सुदीप तनेजा	– सपने सुहाने
सुधांशु कासलीवाल	– समाज को समर्पित
अनंत कासलीवाल	– बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह
एस.एस. सिंघवी	– आतिशी कप्तानी पारी
आर.के. अग्रवाल	– एजी ओजी लोजी
कमलाकर शर्मा	– नो कन्फ्यूजन ग्रेट कॉम्बिनेशन
ए.के. शर्मा	– कर भला हो भला
एम.एम. रंजन	– बेगला बॉयज/हुकुम हो दिखो तो सही
एन.के. मालू	– इसको लगा डाला तो लाईफ जिंगालाल
आर.के. माथुर	– पुराने खिलाड़ी
आर.बी. माथुर	– एक्सराईज मिनिस्टर
आर.पी. सिंह	– छोटा पॉकेट बड़ा धमाका
आर.एन. माथुर	– नकचढ़ा
सुधीर गुप्ता	– जलपान के बादशाह
ए.के. गुप्ता	– हाजिर जवाब - स्वंम्भू राजा या बिना प्रजा का राजा
महेन्द्र शांडिल्य	– वकीलों की डायरेक्ट्री, हैट्रिक की तलाश में
माधव मित्रा	– जिसका रिकार्ड टूटा
वी.आर. बाजवा	– काम के काम, दाम के दाम
विमल चौधरी	– सीनियर हूं
ए.के. भण्डारी	– जब तक है जान
एस.एस. होरा	– भागमभाग
दीपक चौहान	– फोन बाहर रख के आओ
पंकज गुप्ता	– जो बाकी रहा न जाये
वीर सिंह सिनसिनवार	– लल्लू समझ रहा है
अनुरूप सिंह	– चूक गये
सुरूचि कासलीवाल	– बाजीगर
वृंदा अग्रवाल	– दिलदार
विरूता लोढ़ा	– मीठा जादूगर
रवि चिड़ावा	– मंत्री की नहीं चली
प्रतीक कासलीवाल	– सितारे गर्दिश में
असविया गर्ग	– काम पर ध्यान
राम प्रताप सैनी	– आईडेंटिकल ऑर्डर
देवांग चतुर्वेदी	– मिठा
इंद्रेश शर्मा	– तुमसे ना हो पाएगा
कपिल गुप्ता	– संभालने की कोशिश
संदीप पाठक	– मेहनती वकील
परेश चौधरी	– उड़ता तीर
सुधीर जैन	– रहस्य
शीतल मिर्धा	– अपना टाईम आ गया

कोटा हाड़ौती के हड़किये

राजनीतिज्ञ

हीरालाल नागर	– नई ऊर्जा
संदीप शर्मा	– खाली हाथ
कल्पना देवी	– कागजी राजपाट
भरत सिंह	– राजनीतिक सूचिता
चेतन मीना	– क्षेत्र की चुनौती
प्रहलाद गुंजल	– अपनों ने लूटा
चन्द्रकांता मेघवाल	– गुमनामी
हरिकृष्ण बिरला	– रणनीतिकार
राजेश बिरला	– शहर वासियों की राहत
पंकज मेहता	– वक्त के साथ
राजीव अग्रवाल	– दोनों हाथों में लड्डू
मंजू मेहरा	– अपनों ने घेरा
सोनू कुरेशी	– समझदार
पवन मीणा	– समय काटना है
विवेक राजवंशी	– बेताज बादशाह
लव शर्मा	– मेहरबानी की गाड़ी
राम गोपाल बैरवा	– कारवां गुजर गया
राखी गौतम	– जाने कहां गए वो दिन
रविन्द्र त्यागी	– चाबी का माली
राकेश जैन	– तेरी मेहरबानियां
प्रेम गोचर	– हारे फिर भी वारे न्यारे
भानु प्रताप सिंह	– मौके पर चूके
नईमुद्दीन गुड्डू	– प्रधानी गई